

संज्ञासंग्रह

965

रुद्र २०॥ ॐ हं सा मा य रुद्र ॥ ॐ ये व म हं सा मा य रुद्र ॥ ॐ कृ क २ रुद्र ॥ ॐ न मों रु बा द
न य ति न सि द्धा य म हा वा णु य ता मा य न मा न म ॥ ॐ कृ क २ रुद्र ॥ ॐ न मों रु बा द
वृ षी इ षा नां नि पा त य २ ग ह नि पा त य दे वा सू बा द म र्था नां से म य लि ना ना रु म
कृ नू २ रुद्र स्वा हा ॥ कृ ना य धे पू र्वा दि प द म हा वा लि द म त्या न म र्च इ ति त य ना
नृ र्थ ० ० ० द नू ड य म र्च न वि लो स व सि ण्ग नि कृ नू २ रुद्र स्वा हा ॥ कृ म स व
न दा म म ॥ ॐ ॥ ॐ ति श्री म हा वा णु य ता सु व ति से मा फ ॥ ॐ ॥ ॐ रु म म् ॥
सं व ० ० ० ३ न रु ज रु कृ य कृ न व र्था नि ति ग ने य न वा स न श्री न र्च व न व रु
मृ सि रु न श्री पा णु य ता म हा म नु र्वा य धू न का रु ता ॥ ॐ ॥ ॐ रु म रु वा दी प नि र्च के ना ॥ ॐ

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

तीरुम्बन्वर्थनमः॥३॥नेंजुंकीनाथप्रदधुं डयव (पुत्रियमर्दनीहंरुं सदानक २ त्वीमांहीस ४ मृत्पुननमः
 स्वाहा॥उयवकु॥नेंजनमः॥जीं चतुवापयनमः॥जीं यायुज॥नेंजुंरुं नवानन्दपीमहाविद्या नोऊं
 नीहंरुं डयवकुयं ला या युज॥उयवकु॥नेंजुंरुं महाकालरुं नवायगीयायु॥नेंजीं गिगुद्विरुद्वानिकाये वि
 द्मरुं चिरुस्मानिधीमहिंरुं तन्नागिगुद्विः पुवादया॥१॥नेंजुं नवात्मानाथयविद्मरुं स्वच्छन्दायधीमरुं तन्ना
 नवात्मापुवादया॥२॥नेंजुं गुन्यं कि विद्मरुं तवनाथयधीमरुं तन्ना गुन्यं कि पुवादयात्॥३॥नेंजीं
 डीषधीकमनाथयविद्मरुं जीं कूललिधीमहिं तन्ना डीषधी पुवादया॥४॥नेंजीं कंठनाथयविद्मरुं सी
 नाथयधीमरुं तन्ना कंठ पुवादया॥५॥नेंजीं गीर्वाणिविद्मरुं जीं मायादवीधीमरुं तन्ना वागीर्वाण पुवा
 दया॥६॥नेंजीं अष्टाविंशतिकमनाथयविद्मरुं कृत्तिकायधीमरुं तन्ना क म पुवादया॥७॥नेंजीं

षष्ठाकिणीविद्मरुं महाकालिनिधीमरुं तन्ना सिद्धिपुवादया॥८॥नेंजुं गिखुनाथयविद्मरुं जीं कारु
 निधीमरुं तन्ना गिखुनाथ पुवादया॥९॥नेंजुं कृत्तिकाये विद्मरुं कूलदीयायधीमहिं तन्ना कृत्तिका पुवादया॥
 १०॥नेंजुं मातङ्गिनि विद्मरुं कूलकालिनिधीमरुं तन्ना कृत्तिका पुवादया॥११॥यष्टा॥नेंजुं कूलकालिनि वि
 द्मरुं महामालिनिधीमरुं तन्ना कृत्तिका पुवादया॥१२॥वाला॥नेंजुं कृत्तिका मिनि विद्मरुं चिरुस्कारुनिधीमरुं
 तन्ना कृत्तिका पुवादया॥१३॥कोमायकुमा॥३॥नेंजुं जीं श्रीं जीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं
 रुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं जीं श्रीं नुं
 च्छन्दायधीमहिं तन्ना गिव पुवादयात्॥१४॥नेंजुं स ४ मृतीनाय विद्मरुं मृत्पुन नवायधीमहिं
 तन्ना नव पुवादया॥१५॥धवावा विवद्विवायुसयनामया लात्ममया सीलिकगुदहादि दया॥पूरुणा

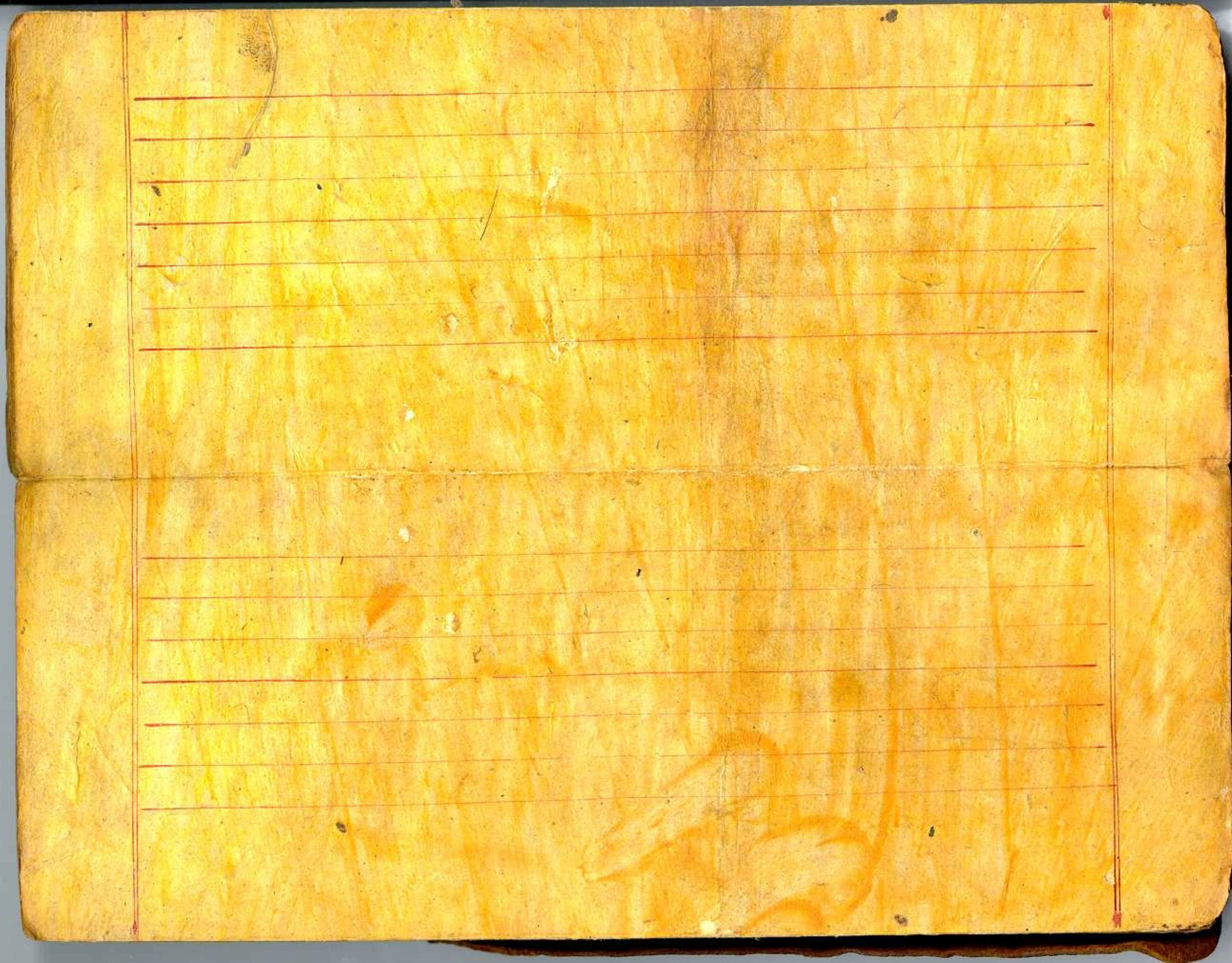
जहं ३

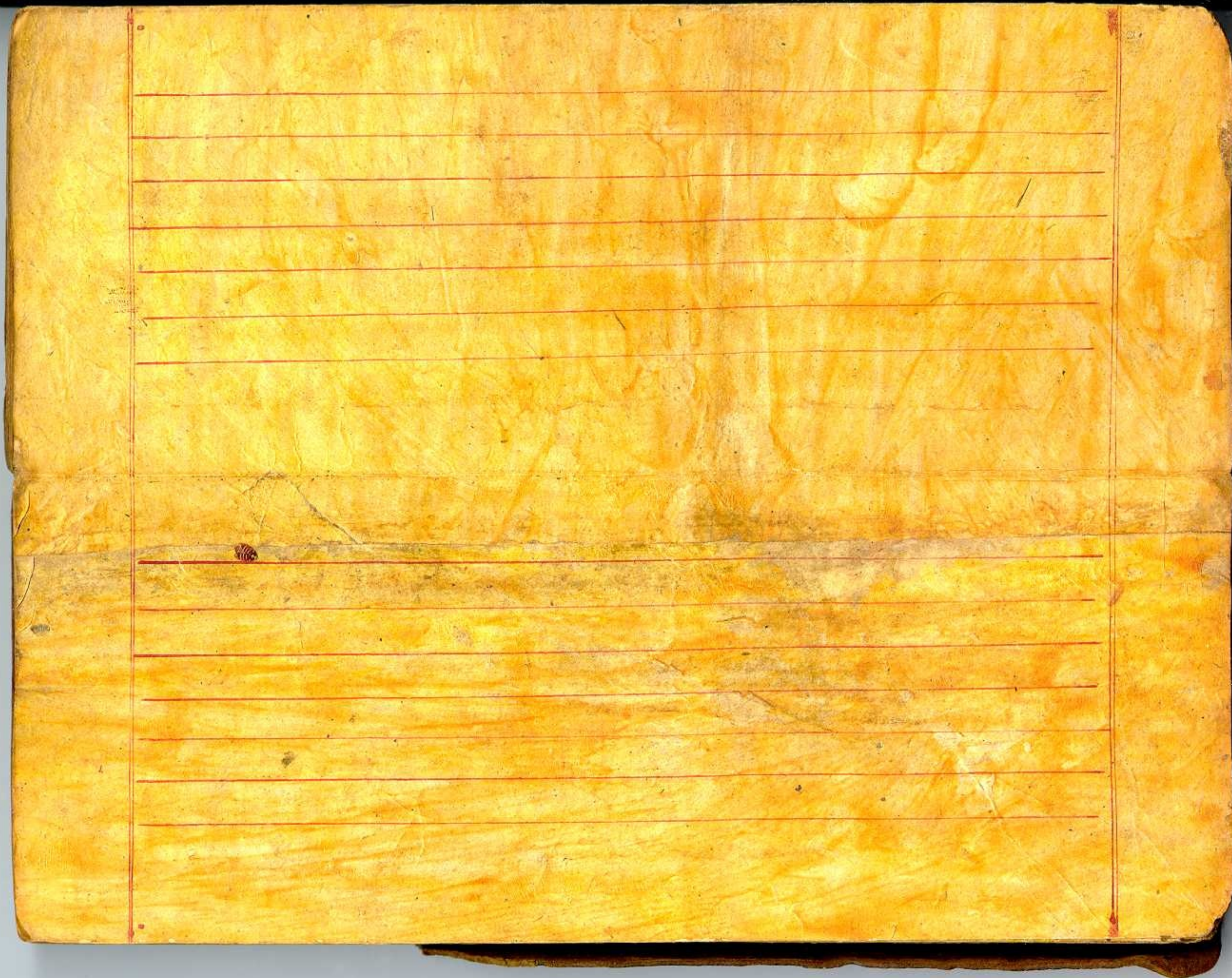
श्रीमहायजुर्मुनेन स ॥ ॥ ॐ अस्य महायजुः स रुद्रा कवमाला मनुस्य महावृद्धः । विष्टय किं च ॥
 उग्रयजुः दवता । कुं वीर्यं शुं धा किं १ द्रुं कीलकं धपुं जय सिद्धा । अथ विनित्याग ॥ ॥
 नृदाधीशुः श्री ॐ जीमनो रगवति उं डय ए द्या । उला अ गल का विनि म्या । सर्व व दान क
 स्वयं पि । निनुं ॥ सर्व स्वयं पि नि को सर्व माह । बल पु दायि नि धीं यत्र । निय नाय न ॥
 स्वयं पि नि कु विष्णु माय श्री महा माय । जय ज । यय सर्वा त्वा ह । सर्व धायि वै । नि ॐ ई स १ म
 दामृ य पु न मति । द विष्णु । सर्व द व ध नी नि नि । ॐ इ । न इ । न न क लि स्वा हा । कुं श्री कुं शुं
 महिषा स न म दि नि । हा । उल २ पु दाल २ जीव २ की वल द नें व द व द श्री १ वा । अ दि नि

की नि त्या न न द द्वा । सर्व धा फ द ल नि । डां डी । कुं वृक्ष विष्णु नृ द ध व स दा । नि वा त्म क । डां डी । द्रुं
 डे डी । दे १ महा य ना स न रु च धि क य ग न र्क । य म य २ डा व य २ मृ द २ का मा क र्ष नि । नें की सो १
 धि य न रु च रु य द ल नि । वीं वृं पूं पूं पूं पूं नि द्वा । द र्प ष वि नू । कृ वि क र वृ । ख । ग । ध । नि । का
 लि २ महा कालि काला न कि । डां डी । रु द व द्वा । वि धा व वि । उं य व मा । न द वा मि नो दि
 स्का दि । वां ना य नि काल वा दि नि को शि क च र्चि क महा ल । क्क मा ह म गु ल वृ न स न र । काम ॥
 यि म्म । कुं । सुं । सुं । सुं । सुं १ काल काल ना नि नि । शु म २ य म य २ य म य २ ग मृ व कृ विष्णु वृ य
 जय २ महा नृ जा स सर्वा स न वि ना नि नि । ॐ डां डी । कीं ड्रुं कुं । श्री । ड्रुं । रु द् । ख । न । न । द य २ व

ना १

















आशा मङ्गल

965

ASHA ARCHIVES



ध्वनिमग्नद्वडावथरुमा कर्मा सिद्धावहलं ॥ विष्णु विनाशय सर्वं कलदहाय
दाहक ॥ यददहामहासिद्धिं साधकस्य यचुक्ति ॥ वरुदहामहा लो विरुमा
संनिदिगारुवत् ॥ मरुदहामहा सुन पूजा सिद्धीव संभूखा ॥ मरुवर्षा यिगल
न यनविच किमलम ॥ नमो या जायन सिद्धि कृष्णाकारि लन नयि ॥ विधिहीना
न सिद्धववउदद विवर्द्धिगा ॥ ममा मवययनने सत्कि यं दहमन्यस ॥ ॥
नमः ॥ स्तुतमना नेममकी कलसंरु ॥ ययुर्ग ॥ उद्वनमलुलैरु ॥ सर्वकामरुसा
दयं ॥ नकवीवालि धनं वायामलनुम ॥ यिवा ॥ नकसा यश्च वरुनमहा ॥ ॥

दिलि श्रवा नमो नमस्तु ॥ अर्घयागय नमः ॥ प्रवकादिगमिं कृत्वा वीनः
विगह मलुल ॥ यद्वासन किमायाग ॥ नमस्तु विगह ॥ दन्यदक कि कामः
॥ श्रीवीरुय कमी कर्म ॥ सुकायूपा मवर्द्धु मदा दीयक मलुल ॥ नमस्तु न्री सा
नमस्तु ॥ मरुयागसमन्विता ॥ ॥ वरुददय फाना यथा ॥ उं नमः ॥ सर्वसिद्धिया
गिनीरु ॥ निपूर्ववर्क ॥ नमः ॥ सर्वसिद्धि माहृषा ॥ निदकि एवर्क ॥ नमानि र्वा
दिमानन्दन निमाय ॥ निउरु नवर्क ॥ सकल कलवक नायिकाय ॥ ॥ नि यधि
मवर्क ॥ ॥ रगव तीव लिकायालिनी ॥ ॥ निउरु नवर्क ॥ नमः ॥ शुभस्त ॥ य दद

ध्यानाली ॥ ॐ ॥ मुख ॥ कौ ॥ वामनासायां ॥ ह्रूं ॥ दक्षनासायां ॥ ह्रौं ॥ वामनश ॥
 ह्रूं ॥ दक्षनश ॥ ह्रौं ॥ मूक ॥ कौ ॥ दक्षक ॥ ह्रूं ॥ न ॥ लि ॥ म ॥ म ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 मर्दसिनि ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 यां ॥ सकल ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
 सकल ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 रुम ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 नृधिन ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥

ଆଗଛ ୨

[illegible]

नलवदकपादं । लघुसकृत् ४ । छुमिवा मघादं ॥ ॥ विविंयादितथवा छरुद
 रुर्गं हिवाचकं । निववर्गमरुदनलकिं वेवविचिंतय ॥ छुद सुटि कसं कांभीय
 क्षेसादिवाचकं । मरुतुना सना नूटां अदकां वर्गविचिंतय । नीलकं चितधुनचूज
 रामकृदमलुतां । नाना नलमरुदकाय मलुतां । लघुनां । सित । लघु । सितानः
 कृष्णखादिमखा कलां । नाना नलसमायुक्तमरुदमास्त्रिकुलुतां । सूर्यविचिंतय
 नूतकावलि यश्च नयना कलां । छुनीषदा मललकिं । कोदं द्या । लघु । मखा कलां
 । नाना द्यादिमरुदक कलु कलु लमालिनी । अनेक नलनिमो वहाव द्यश्च नत

नग

सुनी । निवलीग नम । लघु । अमथकामाद नो छुतां । किं किं जी जालमदमु याधो
 छुद टि लघुनां । वना सिधुलका कषमूर्तु दक कन धर्ग । अलीखदा मसु याव
 धर्न कल लघुनां । वाल घलुका मरुतुना नूयु मसु । लघुनां । घर्धनी नूयुना
 नाव द्युधिर्न वन द्युर्ग । सुखन स्याति नरु स्यादिलुज क मुख स्याव । सुख नूद स्या
 वानूदवी नासन न स्याव । कल न्याव कसं का लला समूदसं घर्क । नाम कूया
 वनि र्था कं गग लं वा नू । लघुनां । माग द्यु क स्या मथ मूर्तु यं वा स्या द्यु क या चिनी ।
 वरु सिद्धसमाकीर्ण सिद्धया गि नियुक्तिनी । न कवीनां सन द्याथ घलु मथ

टाचिग ॥ वरुं वागिवयुष्टव कर्तुं काखट धानिदी ॥ दाना रुयक नाह्यौ वनिव
 म्वाखट कं विना ॥ महालक्ष्मी मयं वाथ भूरुयं विनिगार्थदी ॥ ॐ नमः ॥ नमः
 श्रुतावरुं देमडं श्रुता ॥ सिगास्यमं च केवार्थयुं कां नागलु रुष दी ॥ भूमि सीमा
 गिउं भववदुं देह स्व नूयन ॥ ॐ निवर्तुं देह ॥ ॥ अथ यददद ॥ आचो व
 क्षुमया ॥ गनयददं रुम ॥ अरु व ॥ ॐ नमः ॥ च ॥ ३ गिन सि ॥ सर्व सिद्धि यागिनी
 यानमः ॥ व १० ललाट ॥ सर्व सिद्धि मा रुयानमः ॥ व १० नासा ॥ निहादिमान
 नदि गाथी व १० वामन ॥ सकल कल चकनायिकाथी व ११ दकन ॥ रुगः

यामलाष्टकसंवाकोलयादियागयाजिनं ॥ २

वरुं व ४ ॥ नमः ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०
 यदाष्टकं व ३ ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०
 ॐ नमः ॥ व ३ ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०
 नमः ॥ समस्त मुखे मधुल ॥ यदाष्टकं द्वितीयां रु विष्णु स्वर्ग्य कीर्तिनं ॥ सिद्ध
 यक समुत्थानं ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०
 वामन ॥ व ३ ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०
 विना विष्णु कल दल निव १३ वामन ॥ वरुं कायालि नो व ३ वामन ॥ १० यथा व ३ दकन ॥ १०

महामुलीयसकलक्षयमथनिवरेवामाहुलिनखयुदविआगकांग
कृवगदकृष्णलेपसकलसवधदकृवाहीवलावलावधदकृमुनिर्विधा
नननूधिनानुवक्षरुक्तिलिव११दकृहुमांउलीयुममस्रगुमदमद्वरे
दकृहुलिनखयुस्वाहिसाहि॥५॥उदय॥विधूलनकिन्दकिन्दव६वामक
न॥किन्दकिन्दव४दकृमन॥खलनगाठयगाठयवरेवामदकृथा४क
कृय॥कृदयकृदयव३नाही॥गावथावममसकलमनानथसाध
यसाधयव१२आधाययमकावृत्तिकवगधानो॥रुगवनिव४उरुम

हरेववनूयधनिविव१०वामकृष्ण॥विदगवननमित्तव८दकृकृष्ण॥
सकलमनुमान४वगवामात्री॥युतनजनवसलव६वामात्रावधसि॥दविम
हाकालिकालनाधनिव११वामजानी॥कृकृकृव३वामउरु॥यसीदमद
नाउनीव८दकृउरु॥कृकृकृव४वामयादाहुलीयु॥सनामनकन्यका
वगदकृयादाहुलीयु॥कृकृकृव४वामजानी॥कृदकृयाद॥रु
रुदरुदरुद३वामयाद॥स्वाहाव२युष्टव१॥मूलमूर्क॥मूलाधनासः
हृमदेलययर्कयायर्क॥वहुर्किंनयद४धाकंनूदखलुंरुनीयर्क॥धुदवः

[illegible]

उपदायकं ॥ ॐ यन्नमहं सिद्धिनिर्वाहमागद विषमाय प्रवयसमनिष्क
लद्विना निष्कलदलनिष्क यद्यथा भूषितं न विष्कलं लक्ष्यं मथ निद विष्क
गच्छ आगच्छ दुःसहसवत्सवत्स न न प्रविनाकु वक्ष्यते कति मम स्रष्टु नमदम
द स्वादि स्वादि विष्कलं न हिन्दु हिन्दु किन्दु किन्दु स्वादि न गाउ य गाउ य कुद
य कुद य गाव शाव नमम सकलमेना न था साधय साधय यन्नमका नू लिकं रु
गवति मङ्गलं न व नू य धा विनि विदल व नू न मिग सकलमनुमाग १५ न न ऊ
न व नू ल द विमङ्ग कालि काल नागनि दू दू दू य सीद मदन नाउ ना कू नू कू

जपे ३

सिद्धि तस्मिन् विष्णु कालि यो विष्णु ह नमस्तस्मात् स हि प्रवादया शा गायत्री ॥
ॐ सिद्धि तस्मिन् विष्णु नवत्यधिकधीमही तन्नो लस्मी प्रचादयात् ॥

ॐ नमो गायत्री ॥ ॐ अस्मिन् सिद्धि तस्मिन् श्री माता मरु स्यात् स्त्री स्व नमः वि अ नू
य क न्यः श्री सिद्धि तस्मिन् श्री द व ना डी वी जै स्वा हा म किः ॐ की न कं सर्वार्थ सिद्ध
ये वि नि याम ॥ ॐ नमो सर्व सिद्धि या गिनी न्या नमो सर्व सिद्धि मा ह स्त्री न
मानि ह्यो दि गान नन्द नन्दि नाये सकल कूल व कु नायिका ये ह ग व र्णे व लु का पा लि
न्ये ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीं श्रीं नमो ॐ य न म हं शि नि नि र्बी ल मा भू द वि ष मा प पू व
पु म म नि स क ल इ नि ना नि स क ल द ल नि स र्वा य दा म्हा वि ना नि वि स क ल हा
रु प म वि नि द वी र्क श्रीं श्रीं श्रीं ग क र ह स र व ल्म र न न नू धि ना न्त व र्मा ह दि

यय पा ७

दि दि

लि म म स्त ग क्त्वा न्म ई २ स्वा हिर जि ह्न ल न हि नि वि कि नि वि ख ड्न ल ता ठ य २ श्रीं
श्रीं श्रीं श्रीं ४ म म स क ल म ना न था न्मा ध य २ य न म कान् नि क ह ग व ति
म हा ह न व नू प क्ष त्रि लि जि द भा व न न मि त स क ल म लु मा त ७ य न ज न व स्त
स द वी जं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं म हा कालि काल ना नि ह्रीं ३ य सी द २ द म ना तु नी क
नू २ सु ना सु न क न्य का श्रीं श्रीं ह्रीं ३ ह्रीं ३ स्वा हा २ ७ ॥ मा ता म रु ४ ॥ ॥ ७ क
प का न ४ ॥ ७ ॥ ॥ ॐ नमो सर्व सिद्धि या गिनी न्या नमो सर्व सिद्धि मा ह स्त्री न
नि ह्यो दि गान नन्द नन्दि नाये सकल कूल व कु नायिका ये ह ग व र्णे व लु का पा लि

पुसंमनिःसकलद्रविकानिःसकलपुष्पमनिःसकलपुष्प
 मथनिदवीश्रागकुरुसुसुवल्मःनननृधिनधानानुवसारुद्रलिममसर्वेषु
 न्मद्विस्वादिश्रितिलनहिनदिस्वस्वस्वनादयःकृदयःतावद्यावंममसकल
 ममानयंसाधयःपनमकानूजिकेरुगवमिमहालेनवतूपधमिदिदिदवावनव
 मिकसकलमनुमानेतिपुननजनवत्सलदविमहाकालिका॥मिनिउंरुं
 पुसोददेमेनाकुनांकीरुं
 हंहीकींकींनमः॥॥मालापवमपुकात्र॥॥सिद्धिलश्रीमालाननु॥उंनमगमि

द्विलश्रीमनुस्यपयाग॥^{श्री ३}वालवासफ^{नवम}पुष्पमनिवात्रय॥नात्रिकासफजपुष्पकत्वा
 सावकपुष्पवल्मपस्मानयकादिःयैयैगाउयनिकुक्षः॥नैविनयनिकिदिर्पःन
 रूपस्मानरुयःकनवाउथिकाद्योःसफजफादकननु॥अस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्वस्व
 र्थाविवात्रसाःननुदाग॥द्विस्व
 वनवदवीविनामय॥विस्व
 नंदविःस्व
 मोदयनिःमकुम्भयनसमुक्तंरुंरुमागुत्रकपुर्न॥गमलोचनसमाश्रितंमकारि

मन्त्रिर्नरुत्वा किञ्च कंच विष्णुनि ॥ नलनाङ्गकूलेशूक-संजमसजया रुवः । व । रु
 सर्वनानीर्षा कामदेवसमा रुवः ॥ नि सिद्धि लक्ष्मी माला मनु स्य रु लं समा फी ॥ पुरु ॥
 सरगं आरु ग थकू वाय धून काव गील आन न्या पाश्चात्तरु न नी रु श या रु विया ॥
 ह्यस्य जिनामलु ॥ उं अं कं वं टं तं यं वं हां जी रुं स । हूं हूं स्वाहा ॥
 अस्मत्पुत्रं गिनामलु ॥ अं कं वं टं तं यं वं हां जी रुं स । हूं हूं स्वाहा ॥
 महाकाश महासमुद्र महापुत्र महानिर्धवना हूं वीर्ज जी रुं किं ४ पत्र कल निवा
 वल्लभ विनियोग ४ ॥ ॥ जी वट दी धन न्या स ४ ॥ नाना वत्ता चि वाका नै वृ का रु ४
 अवलेयं वाद्यादियु रिया फी सान्यु की नि विं सम ० ॥ मल्ल कर्म वि वी जा य

नवनल समन्तिर्न घनकार्या सकलाल मकूपानां वेचिकयः ॥ बाला वली मल कार्क ऊ
 गल्लियमकुर्त पीगवर्तुं महावाक्त्रिं समनें शुभ कयः ॥ वना समलु वना वा घमलि
 नै नू हल दिव पवनं समने दिव्य जीवनें पालन वृष गहन दी पर्वत वृकादि कलिना
 ग्रामसं कुला आवावरु गंग गता ॥ ध्याया पृथी रुमनि ॥ सुशान्ति देगहन कय काल
 वक्र समन्तिर्न निर्मल गगन वायः ॥ पालेना माधययदं ॥ ॥ नव वट द व गा य
 वा

नमः २

[illegible]

अथ वराहमहोरारोषणमन्त्रः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं चण्ड रूपे. चण्ड २ प्रचण्ड २ कह २ प्रस्फुर २ हन २ ग्रस २ वन्ध २
जम्भय २ स्तम्भय २ मोहय २ सर्वसेनाः मुखवन्धं कुरु २ सर्वडाकिनीनां ग्रहभूतपिशाचयक्षान्
त्रासय २ मरु २ मारय २ रुरुचण्ड रुजरक्षचण्ड महासेनबहुकनाथ आशापयति ॐ चण्ड महा
रोषणाय ह्रीं ह्रीं फट् ॥ ॥ इतिः ॥ ॥ ॐ ह्रीं विंदुकाय आपडुक्षारणाय कुरु कुरु वदुकाय ह्रीं ॥ इति बटुक आपडुक्षारमंत्रः ॥

इतिबहुकआपडुधरमंत्रः॥

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

ॐ श्रुत्वा प्रीतिं निरामकुसुमहेन वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ प्रीतिं निरादयवतां वीर्यं ह्येवमिति ॥ कौंकीलकसर्वापकम् जपयेन्मियागः ॥ जं ३ त्र्यंकादि, तत्त्वेव कदादि ॥

यत् ४

मंगल ३

[illegible]

मात्महसनवायः कवातिकविष्मनिकावयिष्मतिवातान्सर्वानन्यथा निवर्हि स्वायतनिमस्रक ॥
॥ ४ ॥ ॥ निधीमहाहेनवतकुविद्यनीतयुर्ह्यगिनामनुस्समाये ॥ ५ ॥ ॥ सुववाजसुययागभव ॥



